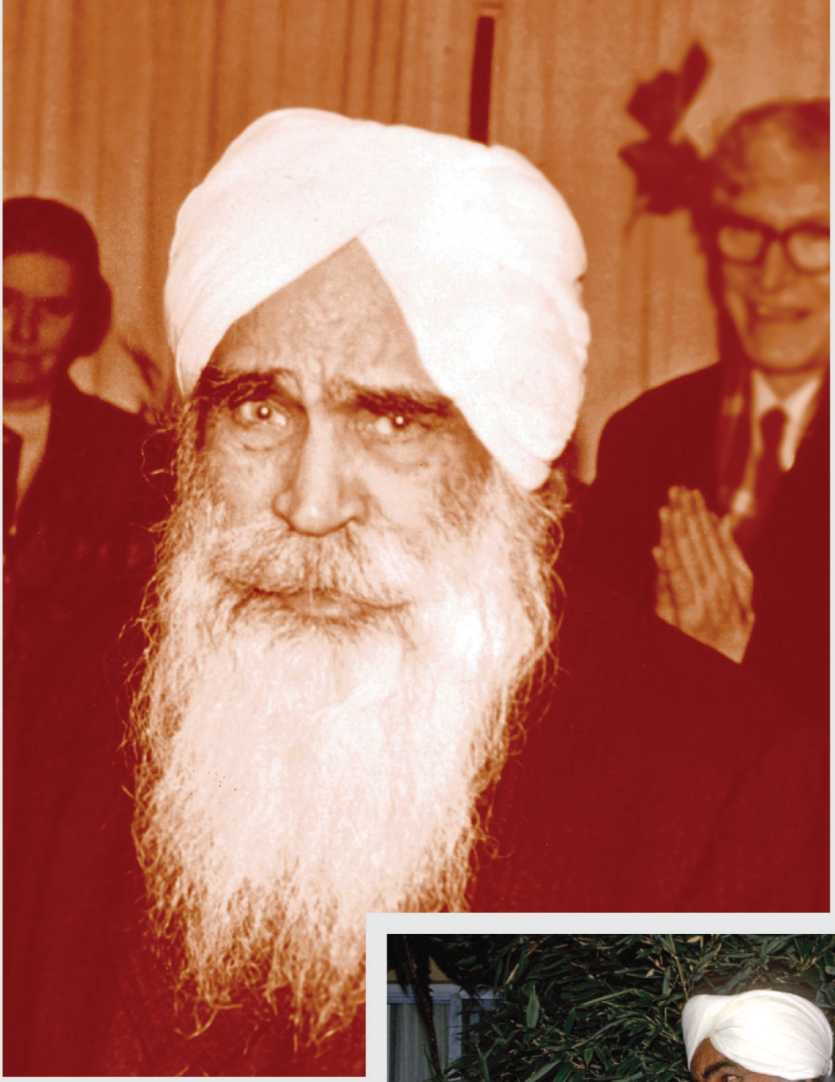

अनायब बानी

मासिक पत्रिका

अगस्त-2021

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–उन्नीसवां अंक–चौथा अगस्त–2021

3
संसार की चेतना से ऊपर उठें
(परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के वचन)

9
इम्तिहान
(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा सुखपाल के जन्मदिन पर एक संदेश)

15
अपने मन को समझाएं
(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा विदाई के समय का संदेश)

29
ध्यान
(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब)

32
कृपाल गुरु आजा (शब्द)

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिँह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **डॉ सुखराम सिंह, परमजीत सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 233 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

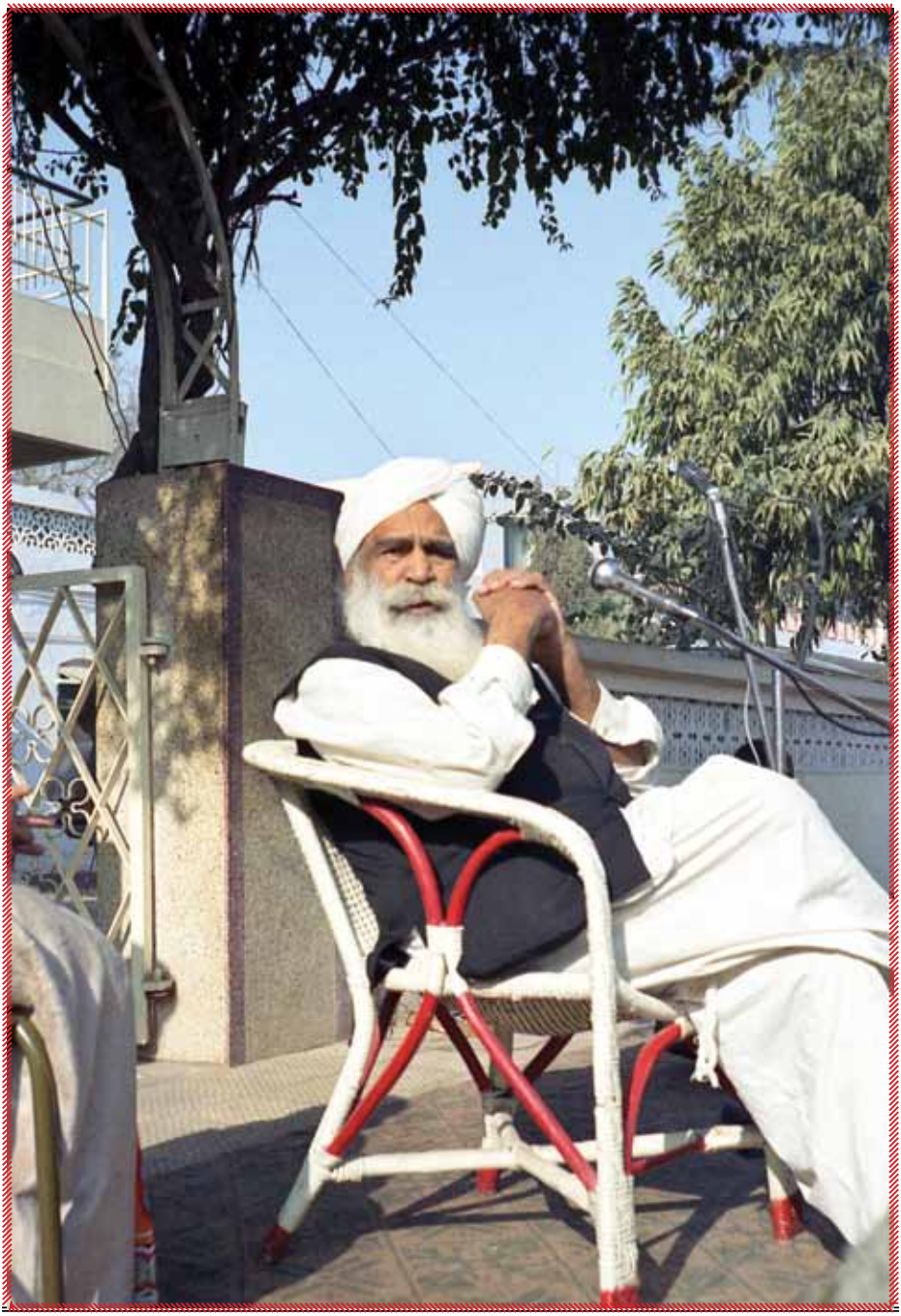

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के वचन

15 जनवरी 1971

संसार की चेतना से ऊपर उठें

आपने जपुजी साहब में पढ़ा होगा कि जब आप ऊपर उठते हैं तो वहाँ मंडल ही मंडल, आकाश ही आकाश हैं। वहाँ का हवाला तो दिया गया है लेकिन लोग यह नहीं जानते कि उसका वर्णन कैसे किया जाए। एक दफ़ा गुरु नानक साहब फारस गए तब उन्होंने कहा, ''वहाँ मंडल हैं, वहाँ आकाश ही आकाश है जिसका कोई अन्त नहीं।'' वहाँ किसी मुसलमान सन्त ने ऐतराज किया कि हमारे कुरान में केवल सात आकाश हैं लेकिन आप कह रहे हैं कि आगे आकाश ही आकाश हैं। गुरु नानक साहब ने उससे कहा, ''अगर तुम्हारी दृष्टि सात तक ही खुली है तो ठीक है लेकिन उसके आगे भी मंडल हैं जिनका कोई अन्त नहीं।

लोग रोजाना जपुजी साहब पढ़ते हैं लेकिन यह नहीं जानते कि उसका मतलब क्या है? गुरु नानक साहब ने देखा कि वहाँ मंडल ही मंडल और आकाश ही आकाश हैं उसका कोई अन्त नहीं, उसको गिना नहीं जा सकता। परमात्मा अनन्त है आप उसकी अनन्त रचना को कैसे गिन सकते हैं। जब तक आप उन्हें देख न लें या उन तक आपकी पहुँच न बने तब तक आप उनकी शोभा को नहीं देख सकेंगे।

मुसलमान सन्त मौलाना रूमी कहते हैं, ''मैंने कुरान का निचोड़ निकाल लिया है जो मैं आपको दे रहा हूँ और उसका माँस व हड्डियाँ कुत्तों के लड़ने के लिए छोड़ दी हैं।'' मौलाना रूमी के द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द बहुत सख्त हैं, मौलाना रूमी एक बहुत ऊँचे सन्त थे। आप कहते हैं कि लोग छोटे-छोटे नुक्तों पर झगड़ते हैं लेकिन अंदर के असली मुद्दे तक नहीं पहुँचते।

हवाई जहाज में जाते हुए आप हवाई जहाज के नीचे बादलों की परतें देख सकते हैं। जो कभी हवाई जहाज में गया ही नहीं वह किस तरह समझेगा। आप अपने आपको जानें, भावनाओं या अनुमानों के स्तर पर नहीं, बल्कि आत्म विश्लेषण के द्वारा **संसार की चेतना से ऊपर उठें**। जब आप ऊपर उठते हैं तो आपका दृष्टिकोण बदल जाता है इसके लिए आपको किसी किताबी ज्ञान की जरूरत नहीं।

एक पढ़ा–लिखा आदमी बहुत से उदाहरण दे सकता है लेकिन अनपढ़ आदमी केवल वही शब्द इस्तेमाल करेगा जो उसे आते हैं। बुल्लेशाह के गुरु इनायत शाह, माली थे। बुल्ले शाह ने इनायत शाह के पास जाकर कहा, ''परमात्मा को कैसे पाया जा सकता है?'' उस समय इनायत शाह प्याज के पौधे एक जगह से हटाकर दूसरी जगह लगा रहे थे। इनायत शाह ने बुल्ले शाह से कहाः

रब दा की पावंणा इधरो पुट्णा ते ओधर लावणा

परमात्मा को पाना बहुत आसान है। जिस तरह एक पौधे को इधर से हटाकर उधर लगाना है। आप अपनी तवज्जो बाहर से समेट लें, यह तवज्जो का सवाल है और कुछ नहीं। अगर मैं आपकी तरफ देख रहा हूँ तो आप मुझे केवल अपनी तरफ ही देखने दें। परमात्मा अकेला है और वह चाहता है जो भी उसके पास आए वह अकेला ही आए, यहाँ तक कि अपनी अक्ल, बच्चे, धन–दौलत भी साथ न लाए।

यह रचना एक लपेटा हुआ लिखित दस्तावेज़ है। जब इसे खोला जाता है तब सारी रचना आरम्भ हो जाती है लेकिन जब तक आप इसे देख नहीं लेते, इन बातों के सही मायनों को नहीं समझ सकते। भावनाएं, जज्बात और अनुमान लगाने में गलती की संभावना है; देखना इन सबसे ऊपर है। स्वाभाविक है कि हर व्यक्ति अपने मूल (जहाँ से वह आया है) में जाना चाहता है। आप मोमबत्ती जलाते हैं तो उसकी लौ ऊपर की तरफ जाती

है चाहे आप मोमबत्ती को उल्टा भी कर दें तो भी लौ ऊपर ही जाएगी। हमारा मूल ऊपर सूर्य है, आत्मा परमात्मा के तत्व की ही है। जब वह मुक्त होगी और सभी बंधनों से कट जाएगी तो वह ऊपर ही जाएगी। अपने मूल में जाने का कुदरती रूझान सभी में होता है।

हम बाहरी शक्तियों स्थूल, सूक्ष्म और कारण से बंधे हुए हैं इसलिए यह जरूरी है कि हमें कोई बंधन न हो। हम सांसारिक वस्तुओं के बारे में सोचते हैं और उनमें इतना रचे हुए हैं कि हम उनसे अलग नहीं हो सकते।

सतगुरु पहले ही दिन आपको देह चेतना से ऊपर उठने का नमूना देता है। अगर आप अपनी पूरी तवज्जो शरीर में से समेट लेते हैं तो वही सच्चा सन्यास है। मैं आपको घर, परिवार छोड़कर बियाबान में जाने के लिए नहीं कह रहा हूँ। आप शरीर को त्याग दें यह मुश्किल बात है बाकी सब छोड़ना आसान है। संसार के सभी मोह छोड़ने बहुत आसान हैं लेकिन मन को काबू करना और देह चेतना से ऊपर उठना मुश्किल है। आप अपने मन को काबू करें और **संसार की चेतना से ऊपर उठें**। पुराने दिनों में हाइड्रोजन गैस वाले गुब्बारे होते थे उन्हें धागे से बाँधकर धरती पर रखते थे लेकिन जब धागा काट दिया जाता था, गुब्बारा हवा में उड़ जाता था, ये कुछ ऐसा ही है।

हम स्थूल संसार के नहीं हैं, हम दूसरी दुनिया के हैं। हमारे हाथ–पैर बंधे हुए हैं और हम यहाँ फँसे हुए है। हम इस संसार और इसके बंधनों को नहीं छोड़ सकते। सतगुरु पहले ही दिन आपको ऊपर उठने का थोड़ा बहुत प्रदर्शन देते हैं। यहीं से A,B,C शुरु होती है आगे और मंडल ही मंडल हैं।

रूस का महान राजा पीटर पानी में चलने वाले जहाज बनाने का काम सीखने के लिए हालैंड गया। वह वहाँ पर मज़दूरों वाली पोशाक पहनकर मज़दूरों की तरह काम करने लगा। हालैंड में कुछ ऐसे लोग थे जिन्हें रूस से निकाल दिया गया था। पीटर ने उन लोगों से पूछा, ''प्यारे मित्रों!

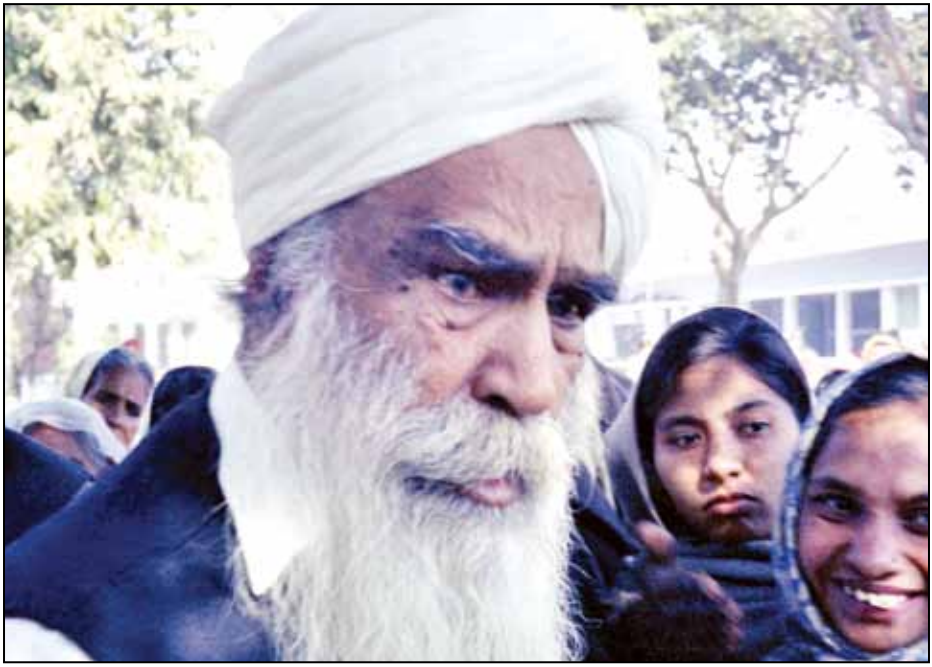

आप लोग यहाँ पर क्यों हैं, आप अपने वतन वापिस क्यों नहीं जाते?'' उन लोगों ने बताया कि हमें वहाँ के राजा के हुक्म से निकाला गया है हम वापिस नहीं जा सकते। पीटर ने उनसे कहा, ''रूस का राजा मेरा जानकार है, मैं उससे सिफारिश करूंगा कि वह आपको वापिस आने दे।''

कुछ लोगों ने पीटर पर यकीन किया कि लगता है शायद! यह राजा को जानता हो। पीटर जब वापिस रूस आने लगा तो जिन लोगों ने उस पर यकीन किया था वे उसके साथ चले गए। जब वह रूस में दाखिल हुआ तो लोगों ने उसके आदर में सिर झुकाए। जो आदमी उसके पीछे गए थे उन्होंने महसूस किया कि यह आदमी बहुत रोबदार लगता है, यहाँ का हर व्यक्ति इसका आदर कर रहा है। वह रूस की राजधानी मॉस्को पहुँचकर सिंहासन पर बैठ गया। सतगुरु का कहना मानना कुछ ऐसा ही है।

परमात्मा आपकी राह देख रहा है। वह मित्र आपका इंतजार कर रहा है, आपसे जितना जल्दी हो सके वापिस जाओ। यहाँ के सभी कर्ज उतार दो, अपना लेना–देना निपटा लो।

सूक्ष्म मंडल, स्थूल मंडल से ज्यादा खूबसूरत है और कारण मंडल उससे भी ज्यादा खूबसूरत है उसके आगे के मंडल उनसे भी ज्यादा सुंदर है। जब आपको उनका थोड़ा सा भी स्वाद आ गया तो आप यहाँ एक घड़ी भी रहना पसंद नहीं करेंगे। लेकिन सन्तों की कुर्बानी देखें! दसवें गुरु ने कहा, ''मैं परमात्मा का घर छोड़ना नहीं चाहता था लेकिन मुझे परमात्मा का हुक्म मानकर संसार में आना पड़ा।'' वे तो आपको वापिस लेने के लिए ही संसार में आते हैं।

अगर आपके पास करोड़ो रूपये भी हों तो क्या वे रूपये आपके साथ जाएंगे? लेकिन जिन तरीकों से आपने वह पैसा कमाया है वह आपके साथ जाएगा। अगर आप किसी का खून चूसते हैं, किसी का हक मारते हैं तो आपको उसका भुगतान करना पड़ेगा। मैं आपसे कहता हूँ कि आप जब भजन में बैठें तो आप यह मान लें कि आप मर रहे हैं। इससे आपको मदद मिलेगी लेकिन आप सांसारिक रंगों में इतने रते हुए हैं कि कोई और रंग चढ़ता ही नहीं तो मौत का ख्याल आपको आ ही नहीं सकता।

इस अवस्था को विकसित करने के लिए एकान्त बहुत जरूरी है। मेरे शुरूआत के जीवन में अगर किसी ने मुझे दफ्तर के बाद मिलना होता तो वह श्मशान घाट या दरिया के किनारे आता था। मैं श्मशान घाट में मुर्दों को आते हुए देखता और सोचता, ''ओह! यह क्या है?''

हम कहते हैं कि हमारे पास भजन करने का वक्त नहीं है, हमारे पास और भी कई जरूरी काम हैं, ठीक है कल देख लेंगे। आप परमात्मा से झूठ बोल रहे हैं, टालमटोल कर रहे हैं कि मैं कल भजन करूंगा, परसों करूंगा यह काम खत्म कर लूं फिर भजन में समय लगाऊँगा। फर्ज करें कि

आज आप मर जाते हैं तो फिर क्या होगा? खैर आत्मा मरती नहीं लेकिन शरीर तो उसे छोड़ना ही पड़ता है। अगर आपके खिलाफ कोई फौजदारी का मुकद्मा हो और बिना जमानत के वारंट आ जाए तो आप अपने घर में छुप सकते हैं लेकिन वे आपको घसीटकर ले जाएंगे। आखिरकार सबने जाना है अगर आपने सदा यहाँ रहने का कोई इंतजाम किया है तो कृपया मुझे भी बताएं? आपको कैसे जाना है यह सीखना चाहिए ताकि आप शान्ति से खुशी से मुस्कुराते हुए जाएं।

हमारे हुजूर फरमाया करते थे, ''अगर आप यह देखना चाहते हैं कि गुरु कैसे काम करता है तो किसी सतसंगी की मौत के वक्त उसके पास जाएं और उससे पूछें वह बताएगा।'' 3 अप्रैल को मेरी धर्मपत्नी चलाना कर गई। 31 मार्च को उनके अंदर महाराज जी आए। मेरी धर्मपत्नी ने कहा, ''मैं 2 अप्रैल को जा रही हूँ।'' मैंने उनसे कहा, ''2 अप्रैल को बाबा सावन सिंह जी की बरसी का भंडारा है, यहाँ हजारों लोग होंगे उस समय परेशानी हो जाएगी।'' उन्होंने कहा, ''ठीक है मैं उसके अगले दिन तीन या चार अप्रैल को चली जाऊँगी।'' तीन अप्रैल को मैंने उनसे पूछा, ''क्या आप तैयार हैं?'' उन्होंने कहा, ''हाँ।'' मैंने कहा, ''ठीक है जाओ।'' वह मुस्कुराई और चली गई।

हम सबने जाना है, कम से कम हम खुशी से तो जाएं। स्थूल शरीर मे रहते हुए आपने कहाँ तक तरक्की की है? जहाँ तक की है उस जगह तक तो आप सीधे जाएंगे। मानव देह में रहते हुए आप ज्यादा तरक्की कर सकते हैं अगर आपने विभिन्न मंडलों के आवरणों को अपने ऊपर से उतार दिया है तो आप सीधे निजधाम जाएंगे।

मैं आपको फिर कहूँगा कि यह ज्ञान किताबों में नहीं दिया गया आपको देह छोड़ना सीखना पड़ेगा। सबसे पहला काम जो आपने सीखना है वह देह को छोड़ना है। जब आप देह छोड़ते हैं तो सभी योजनाएं खत्म हो जाती हैं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा सुखपाल के जन्मदिन पर एक संदेश

24 अगस्त 1986

इम्तिहान

16 पी.एस. आश्रम रायसिंह नगर, राजस्थान

आया सावन आया सावन झड़ियाँ ला गया रूहाँ सच्चखंड विच पहुँचा गया

मैं अपने परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने अपना शान्ति का धाम सच्चखंड छोड़कर हमारी आत्मा पर रहम किया। आपने सब आशाएं पूर्ण करने वाला, शान्ति देने वाला, संतोष देने वाला नाम बख्शा। इस नाम को चोर चुरा नहीं सकता अग्नि जला नहीं सकती हवा उड़ा नहीं सकती। हम इस नाम को खेतों में उगा नहीं सकते। हम दुनिया की किसी भी कीमत से नाम प्राप्त नहीं कर सकते। कबीर साहब कहते हैं, ''त्रिलोकी एक तरफ हो फिर भी हम नाम की महिमा बयान नहीं कर सकते, गुरु का शुक्राना नहीं कर सकते।''

ऐसा नहीं कि नाम लिया तो इंसान नाम वाला बन गया। सही मायने में वही नाम वाला है जो अपना संपर्क नाम के साथ जोड़ लेता है, जिसका संपर्क नाम के साथ जुड़ गया उसकी नजर में जितनी इज्जत एक औरत की है उतनी ही एक मर्द की है। हमारी आत्मा के ऊपर तीन पर्दे हैं। पहला स्थूल पर्दा है जिसमें अभी हम बैठे हैं, इसके अंदर सूक्ष्म पर्दा है और सूक्ष्म के अंदर कारण पर्दा है। जब हम आत्मा से तीनों पर्दे उतारकर दसवें द्वार में पहुँच जाते हैं तो वहाँ पहुँचकर लिंग भेद खत्म हो जाता है। वहाँ पहुँचकर पता लगता है कि जो आत्मा एक लड़की में है वही आत्मा एक लड़के के अंदर है। वहाँ पहुँचा हुआ महात्मा औरत–मर्द में भिन्न–भेद नहीं समझता। सन्तों की मंजिल इससे काफी ऊपर है वहाँ पहुँचकर प्यार निर्मल और प्योर हो जाता है।

आज के युग का आपको पता ही है कि लड़के पैदा करने वाली औरतों को लोग आदर देते है और लड़की पैदा करने वाली औरत को अच्छा नहीं समझते। लड़का बीमार हो जाए तो उसके ईलाज पर पूरा जोर लगा देते हैं अगर लड़की बीमार हो जाए तो बिल्कुल भी तवज्जो नहीं देते। मैंने घरों में ऐसी बूढ़ी औरतें भी देखी हैं जो लड़कियों को पूरा खाना नहीं देती। क्या परमात्मा की आत्मा के साथ ऐसा अन्याय करना ठीक है?

मैंने बड़े–बड़े ज्ञानी पढ़े–लिखे सज्जन देखे हैं जब उनके घर भी लड़की पैदा हो जाए तो मैंने उन्हें रोते हुए देखा है लेकिन परमात्मा के किए हुए को बंदा मिटा नहीं सकता। मैंने कभी रोने वालों को ऐसा नहीं देखा कि उन्होंने रोकर लड़की की जगह लड़का कर लिया हो। जब हम उस मालिक के भाणें को टाल नहीं सकते तो क्यों न उसे मान लें।

ईरान में राबिया बसरी रब से मिली हुई एक बहुत मशहूर महात्मा हुई है। भारतवर्ष में मीरा बाई, दया बाई, सहजो बाई जैसी कई औरतें हुई हैं जिन्होंने सन्तमत को अपनाया और अमली तौर पर कामयाब हुई।

राजनीति में भी जो औरतें आयी उन्होंने अच्छा राज किया। इन्द्रा गाँधी के मुत्तलिक तो आपने देखा ही है कि पाकिस्तान का शासक याह्या खान कहता था कि मैं औरत से डरने वाला मर्द नहीं हूँ लेकिन जीत ने इन्द्रा गाँधी के कदम चूमें, आखिर वह याह्या खान पर कामयाब हुई। आज भी बहुत सी औरतें राज कर रही हैं।

परमात्मा हर एक औरत–मर्द को एक जैसी अक्ल देता है लेकिन हम लड़की को किस ख्याल से पालते हैं। हम उसके साथ शुरु से ही द्वैतभाव रखते हैं। जब हम उसे अच्छा नहीं समझते तो उसके अंदर अक्ल किस तरह आए, लड़की–लड़की कहकर उसका बुरा हाल कर देते हैं, बुरे कर्म बनाते हैं। दूसरी तरफ आप लड़के का देख लें। महात्मा लिखते हैं:

मूर्ख ये समझते पुत्र सुख दे, जमण से मरण तक अंत दुख भोगे।

हमें इस बच्ची का जन्मदिन मनाने में न कोई ज्यादा खुशी है और न कोई गमी है। ऐसा नहीं कि हम जन्मदिन मनाकर ही बच्चे से प्यार करते हैं, बाद में भी उतना ही प्यार होता है। जो लोग मेरे आस–पास रह रहे हैं मैं उनका थोड़ा सा ख्याल करता हूँ, इसलिए मैं भीड़ नहीं करता। पश्चिम में लड़की–लड़के में कोई फर्क नहीं समझा जाता चाहे लड़का हो चाहे लड़की हो। परमात्मा का धन्यवाद है कि उसने बच्चा दिया है।

शुरु–शुरु में संसार से मेरा कोई खास वास्ता नहीं था इसलिए मुझे पता नहीं था कि लड़का ठीक है या लड़की ठीक है? सबसे पहले मेरा वास्ता लाला फैमिली के साथ पड़ा। मैंने लाला को सच्चा श्रद्धालु, सच्चा मित्र समझा। ये और इनकी धर्मपत्नी रोज मेरे दर्शन करने आते थे, जब इनके घर पौत्री पैदा हुई तो इन्होंने मेरे पास आना छोड़ दिया। मैंने इनसे पूछा, ''क्या बात हुई, यह भगवान के बस में है अगर मुझमें कोई गुनाह है तो मुझे बताएं?'' उसके बाद इनके कई लड़कियाँ हुई, ये उस समय

ज्यादा से ज्यादा रोते हैं; इससे कुदरत नाराज हो जाती है। मैं इस परिवार को सदा यह बात याद करवाया करता हूँ कि आप मालिक का भाणा मानें। महाराज सावन सिंह जी ने कहा है, ''मैं कुदरत के आगे सिर झुकाता हूँ यह किसी का **इम्तिहान** न ले।'' कबीर साहब कहते हैं:

राम झरोखे बैठके सबका झारा ले,जाँकी जैसी चाकरी ताँको तैसा दे

मैंने देखा है जब तूफान आता है बड़े–बड़े पेड़ गिर जाते हैं। जो लोग कहते हैं कि हम भक्त हैं अपनी बड़ाई करते हैं लेकिन जब मालिक परीक्षा लेता है तो पता चलता है कि भक्ति कहाँ जाती है? सन्त जब तक चिता पर न बैठ जाएं दम नहीं मारते हालाँकि तन–मन उनके बस में होता है। वे अपने आपको गरीब, दास, अवगुणहारा कहकर ही बयान करते हैं। हम लोग मान चाहते हैं लेकिन कुदरत के आगे सब कुछ फेल हो जाता है। कुदरत से, मालिक से डरें। वह आपको जो देता है उसे प्यार से सह लें।

पिछले अप्रैल में दौलतपुरा से एक मजहबी सिख और उसकी पत्नी नाम लेने के लिए आए। उस औरत ने कहा कि मेरे कोई लड़का नहीं। मैंने बहुत उपाय किए, बहुत से बाबों के पास गई लेकिन लड़का नहीं हुआ इसलिए मैं नाम ले रही हूँ। मैंने प्यार से उसकी बाँह पकड़कर कहा, ''बेटा! मैं सतसंग में यही बताकर आया हूँ कि ऐसे काम वाले अपने घर में ही बैठे रहें।'' उसके पति ने कहा कि मैं बहुत शराबी–कबाबी आदमी था, मेरे दिल में कई महीनों से तड़प उठी है, अब आप इसे न निकालें। मैं चुप रहा और मैंने कहा, ''चल बैठ जा।'' उन्होंने नाम लिया और तीन–चार महीने अच्छा अभ्यास किया। वह आदमी शराब–मीट और बुराई की तरफ नहीं गया। वह बीमार नहीं हुआ अचानक ही उसने अपनी पत्नी से कहा, ''तू रोना मत मैं बाबा जी के पास जा रहा हूँ।''

कालीदास मनुख दा बिगड़या कि समझ गया जब विचार आई।

इंसान उस समय समझता है जब विचार आता है। मैं दर्दभरे दिल से कहता हूँ कि लड़की को बुरा कहना ठीक नहीं। सन्तों की हर बात में राज़ होता है। गुरु नानकदेव जी अपने एक सेवक के पीछे कई जन्मों तक फिरते रहे। जब वह सेवक साँप बना तब गुरु नानकदेव जी उसके पीछे गए। कुत्ता बना तब भी उसके पीछे गए और जब बैल बना तब भी उसके पीछे गए। कबीर साहब आठ जन्मों तक धर्मदास के पीछे फिरते रहे। नाम बहुत बड़ी जिम्मेवारी होती है।

गाँव खूनीचक में एक आदमी के पाँच लड़कियाँ और एक लड़का था। जब महामारी की बीमारी फैली उस समय मैं ही गाँव में संभाल करने वाला थोड़ा बहुत वाकिफकार था। उस परिवार के लोगों ने लड़कियों की बीमारी को देखकर बहुत उत्साह मनाया कि अब ये मर जाएं। मैंने थोड़ी सी मेहनत की, मैं बिना बुलाएं हर रोज उन लड़कियों के पास जाता उनकी आँखें धोकर उन्हें शब्द सुनाकर आता, वे लड़कियाँ ठीक हो गई। कुदरत बहुत प्रबल है उसका एक ही लड़का था, उस लड़के ने कहा कि बाबा जी को लेकर आओ मैं तभी बच सकता हूँ। उस आदमी ने कई मेरे मिलने वाले भी मेरे पास भेजे। मैंने कहा, ''भ्रावा! मेरे पास तो जाने का समय ही नहीं है। तूने कहा था कि रब उनका रखवाला है तो रब मुझे उनके पास भेज देता था।''

मैं जुबान से अपने गुरुदेव का धन्यवाद नहीं कर सकता जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर दया की। उसकी नजर में औरत–मर्द, हिन्दु–मुसलमान और सिक्ख–ईसाई के लिए भेद नहीं। बेटे–बेटी ने साथ नहीं जाना। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अमृत कोड़ा बिखया मीठी साकत की बिधि नैनो डीठी।

हमारी जिंदगी में जो चीज फायदेमंद है वह हमें कड़वी लगती है और जो फायदेमंद नहीं वह मीठी लगती है। मैं अपने गुरुदेव का धन्यवाद करता हूँ। सुखपाल को और संगत को बधाई देते हैं। ***

14 जनवरी 1993
मुम्बई
DVD No-215

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा विदाई के समय का संदेश

अपने मन को समझाएं

कण–कण में बसने वाले गुरुदेव सावन–कृपाल हमारी दु:खी आत्मा की खातिर तन धारण करके आए, हम उन्हें नमस्कार करते हैं अगर उनकी दया न हो तो जीव इस तरफ आ ही नहीं सकता। जीव की क्या ताकत है कि यह बेचारा नामदान प्राप्त कर ले। अभी आप शब्द सुन रहे थे:

ऐह गल्लां दा मजबून नहीं कोई भी करके देखे।

सन्तमत परियों की कहानी नहीं यह एक सच्चाई है, सन्तमत उन प्रेमियों के लिए है जिन्हें अपनी जिंदगी में कुछ बनना होता है। हम तभी कुछ बन सकते हैं अगर हम महात्मा की शिक्षा के अनुसार चलें। सबसे पहले हमारा काम आज्ञा का पालन करना है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं :

बिन मंगया सब कुछ देवसी, किस अग्गे करिए अरदास

अगर हम 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं तो सन्तों के दरबार से बिना माँगे ही सब कुछ मिल जाता है, वह मालिक आपके अंदर बैठा है।

महाराज सावन सिंह जी हमेशा कहा करते थे, ''सन्तों के पास आकर वही जीव ऐसी बातें करते हैं जिन्हें अभी समझ नहीं आई कि शब्द–रूप गुरु अंदर है लेकिन हम सन्तों से कहते हैं कि मन नहीं लगता या भजन नहीं बनता। मन अपने मालिक का काम ईमानदारी से करता है। मन का यह काम है कि काल ने जो रचना रची है कोई भी आत्मा इसके अंदर से निकल कर न जाए। हमारा मन हमें भक्ति से दूर ले जाता है, आप **अपने मन को समझाएं**, इसे भजन में बिठाएं।'' तुलसी साहब कहते हैं:

तुलसी रण में जूझना घड़ी एक का काम
नित उठ मन से जूझना बिन खंडे संग्राम

सूरमा, मैदान–ए–जंग में जाकर एक मिनट में फैसला कर लेता है, वह मरता है या मारता है लेकिन सन्त हमें हठीले दुश्मन मन के साथ लड़वाते हैं। यह संग्राम हमारी तड़प, कमाई, गुरु के साथ प्यार और श्रद्धा पर निर्भर करता है। सब सन्तों ने कहा है कि यह बातों का मजबून नहीं करनी का मजबून है, कोई भी करके देखें अगर हम कमाई करें तो यह शिकायत ही नहीं रहती कि भजन नहीं बनता। हमारा भजन तब तक नहीं बनता जब तक हम विषय–विकारों और आलस्य की जहर खाते भी जाते हैं और हाय–हाय भी करते जाते हैं।

मैं कई दिन से आपके आगे सहजो बाई के सतसंग कर रहा हूँ। सहजो बाई ने हर पहलू से हमें समझाया कि हमें गुरु की कितनी जरूरत है? हम एक ऐसी अन्जान दुनिया में आए हैं कि हम जब से परमात्मा से बिछुड़े हैं, हमें पता नहीं कि परमात्मा कहाँ है? अगर हमें यह पता होता कि परमात्मा हमारे अंदर है तो हम बाहर मारे–मारे क्यों फिरते?

मेरी जिंदगी खोज और अभ्यास की जिंदगी है। मैंने तकरीबन हर किस्म के साधन अपना कर देखे हैं जो उन दिनों में प्रचलित थे, जैसे धूने तपाना, जलधारा करना, भगवे या नीले कपड़े पहनना। मैं जब उदासियों में गया तो उन्होंने कहा कि भगवे कपड़े पहनो, शरीर पर राख लगाओ। जिसको परमात्मा से मिलने का इश्क है वह जरूर करता है। सिक्खों में निहंगों का एक खास फिरका है। मैं जब निहंगों के पास गया तो उन्होंने नीला चोला पहनने के लिए और बड़ी पगड़ी बाँधने के लिए कहा। उन्होंने तो तीन–चार किलो की पगड़ी पहनने के लिए कहा था लेकिन मैंने अपने सिर पर पैंतिस किलो की पगड़ी बाँधकर रखी, यह प्यार है। यह समझ बाद में आई कि ये सब कुछ पानी में मधानी चलाने की तरह है।

मैं धूनियाँ तपाकर बाबा बिशनदास जी के पास गया, मैं बाबा बिशनदास जी के पास पहले भी जाया करता था। मेरे माता–पिता ही मुझे बाबा

बिशनदास जी के पास लेकर गए थे। मेरे माता–पिता ने बाबा बिशनदास जी से कहा कि आप इसका कुछ करें, इसका दिल घर में नहीं लगता हमें इसकी बहुत फिक्र है। इसकी रोटी–रोजी का कैसे बनेगा? क्योंकि यह न जायदाद की तरफ तवज्जो देता है और न कारोबार की तरफ तवज्जो देता है। बाबा बिशनदास जी ने एक मिनट देखा और कहा, ''यह आपके लिए इस संसार में नहीं आया। आप अपना फिक्र करें, इसका फिक्र क्यों करते हैं? इसकी वजह से तो हजारों आदमियों को खाना मिलेगा।''

बाबा बिशनदास जी बहुत सख्त थे। सच्चाई तो यह है जैसे अखरोट में से गिरी निकालनी मुश्किल है उसी तरह उस महात्मा के पास टिकना बहुत मुश्किल था। मुझे आर्मी में जो तनख्वाह मिलती थी उसमें से वह मुझे खर्च करने के लिए सिर्फ पाँच रूपये ही देते थे, बाकी पैसे वे आश्रम पर लगा देते थे और मुझसे पाँच रूपये का हिसाब भी पूछते थे। मैं परकार की तरह आपके चारो तरफ घूमता रहा। जब मैं धूनिया तपाकर आपके पास गया तो आपने कहा, ''बेटा! अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की पाँच अग्नियाँ पहले ही जल रही हैं और छठी सूरज की अग्नि तप रही है फिर तूने एक और धूनी लगा ली तो उससे क्या फर्क पड़ता है अंदर तो पहले ही जल रहा है अगर बाहर शरीर को जला लिया तो क्या मिलेगा?'' आखिर आपको दया आई।

उस समय मैं जवान अवस्था में था और मुझे तकरीबन सारी सहूलियते थी। हमारे जैसे परिवार का इस तरफ आना काफी मुश्किल था। आपकी सख्ती ने इस गरीब की जिंदगी को बनाया। मैं सिर्फ आपसे डरता हुआ ही हर तरह की बुराई से बचा। आपके पास 'दो–शब्द' का भेद था। आपने मुझे वह भेद दिया और यह भी बताया कि बेटा इससे ऊपर भी कुछ है लेकिन मुझे नहीं मिला अगर मुझे मिलेगा तो मैं तुझे ले चलूँगा अगर तुझे मिले तो तू मुझे लेकर चलना।

बाबा बिशनदास जी कुँए के मेंढ़क नहीं थे, आप समुंद्र के हंस थे, खुले दिल वाले थे। जब मुझे सीमाप्रान्त में महाराज सावन सिंह जी से मिलने का मौका मिला तो मैं उस समय बाबा बिशनदास जी को लेकर महाराज सावन सिंह जी के पास गया। उस समय बिशनदास जी की उम्र काफी ज्यादा थी और आप बहुत कमजोर थे। एक किस्म से मेरा काम उनको उठाकर ले जाने का ही था। उन दिनों में आज की तरह जीपें–कारे नहीं थी, बाजारों में रिक्शा भी नहीं होती थी, उस समय रास्ता तय करना बहुत मुश्किल था। हमने ब्यास स्टेशन तक का सफर ट्रेन से किया। ब्यास स्टेशन से डेरे का फासला साढ़े तीन मील का था। मैं आपको बहुत प्यार से हौंसले से उठाकर डेरे लेकर गया। आप भजन पढ़ते हैं:

सावन दयालु ने रिमझिम लाई।

महाराज सावन सिंह जी दया के पुंज थे, आपने बहुत दया की। आपने बाबा बिशनदास जी से कहा, ''देखो बाबा! आपका समय नजदीक है अब नाम जपने का समय नहीं रह गया। मैं अंदर ही आपकी संभाल कर लूँगा।'' बाबा बिशनदास जी बहुत भरोसे वाले थे आपने हाथ जोड़कर सिर झुका दिया। जब आपने चोला छोड़ा मैं आपके पास ही था क्योंकि आपका कोई और सेवक नहीं था। आपने मुझे प्यार से कहा, ''मैंने आश्रम में तेरी कमाई से जो ईंटे लगाई हैं ये तेरे लिए नहीं लगाई कि तू इनमें बैठ जाए। तू जिस मकसद के लिए संसार में आया है तूने वह करना है। देने वाला तेरे घर आएगा।'' मैं जिस भी महात्मा से मिला जिसकी थोड़ी बहुत आँखें थी उसने मुझसे यही कहा, ''तुझे देने वाला तेरे घर आएगा।''

महाराज कृपाल पच्चीस साल यही कहते रहे, ''देने वाले का क्या कसूर है सवाल तो लेने वाले का है।'' जब वक्त आया तो महाराज कृपाल खुद रेगिस्तान पहुँचे। मैं किस तरह आपका शुक्राना करूँ। पहली मुलाकात में ही मैंने आपसे विनती की कि मेरा दिल–दिमाग बचपन से खाली है,

मुझे नहीं पता कि मैंने आपसे क्या कहना है? जिस दरबार से बिना माँगे ही सब कुछ मिल जाए वहाँ बातें करने का क्या फायदा? हम जब बातें करते हैं तो सन्त हमें पहचान लेते हैं कि यह करता कुछ नहीं सिर्फ बातें ही करता है। आपने कहा, ''दिमागी कुश्तियाँ करने वाले मेरे आस–पास बहुत हैं मैं खाली जगह देखकर ही इतना सफर करके तेरे पास आया हूँ।''

कहने का भाव जब हम तैयार होते हैं, वह कहीं दूर नहीं हमारे नजदीक ही होता है, हमारी पुकार सुन लेता है। महाराज जी कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है जरूर देती है।'' हमारे अंदर तड़प होनी चाहिए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अमृतवेले बोलया पपीहा तें दर सुनी पुकार
मेघा नूं फरमान होया ते बरसो कृपा धार

परमात्मा एक पक्षी पपीहे की पुकार सुन लेता है तो क्या इंसान की आवाज नहीं सुनेगा? जब पपीहा आलस्य छोड़कर सुबह उठकर स्वाति बूँद के लिए पुकारता है तो परमात्मा उसकी पुकार सुनकर मेघराज इन्द्र को आदेश देता है कि पपीहा पिरो–पिरो कर रहा है इसकी प्यास बुझाओ।

सहजो बाई ने हमें बहुत प्यार से बताया कि हम गुरु के बिना, सन्तों के बिना अंदर नहीं जा सकते। हम परमात्मा को बाहर ढूंढ़ते हैं जैसे मैं पहले अपनी जिंदगी में ढूंढ़ता रहा हूँ। अगर हमें पता हो तो हम बाहर वक्त क्यों खराब करें? पल्टू साहब कहते हैं:

सन्त स्नेही नाम है नाम स्नेही सन्त
नाम स्नेही सन्त नाम को वे ही मिलावे
वे हैं वाकिफकार मिलन की राह बतावे

नाम का सन्तों के साथ और सन्तों का नाम के साथ प्यार है। सन्त नाम के वाकिफकार होते हैं, वे बहुत प्यार से अंदर जाने की युक्ति समझा देते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सच्चे शब्द सच्ची पत होई, बिन नामे मुक्ति न पावे कोई
बिन सतगुरु कोई नाम न पाए, प्रभ ऐसी बणत बनाई है

वह अपने मिलने का चाहे जो रास्ता रख सकता था, वह कुलमालिक है, हम उसे क्या समझा सकते हैं? गुरु साहब कहते हैं:

जिसका गृह तिस दीया ताला, कुंजी गुरु सौंपाई
अनक उपाव करे न पावे बिन सतगुरु शरणाई

जिसका यह शरीर है उसी ने ताला लगाया है और चाबी महात्मा के हवाले कर दी। कभी वह चाबी कबीर के पास कभी गुरु नानक के पास कभी मौलाना रूम के पास कभी तुलसी साहब के पास तो कभी सावन कृपाल के पास गई। हम उस समय तक कारगर नहीं होते जब तक सन्तों के दर पर जाकर अपना सिर नहीं रख देते कि बख्श लो। वे बखशिंद होते हैं, बख्शने के लिए ही आए होते हैं।

गुरु कुंजी पाहू निवल मन कोठा तन छत
नानक गुरु बिन मन का ताक न उगड़े अवर न कुंजी हथ

शरीर ताला है, सन्तों के बिना मन का ताला नहीं खुलता। गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं:

नौं द्वारे प्रकट किए दसवां गुप्त रखाया

नौं द्वारे – दो आँखों के सुराख, दो कानों के सुराख, दो नाक के सुराख, मुँह और नीचे की दो इन्द्रियों के सुराख हैं। ये सारे बाहर जगत की तरफ खुलते हैं हम इनके अंदर खट्टे–मीठे रस चखते हैं। जहाँ वह परमात्मा बैठा है वह दसवां द्वार है। दसवें द्वार में पहुँचकर आत्मा से सारे पर्दे उतर जाते हैं तब हमारी आत्मा को पता लगता है कि मेरा परमात्मा है।

सहजो बाई ने बहुत प्यार से समझाया कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पाँच ताकते हैं, आप इन्हें बातों से बस में नहीं कर सकते। अगर ये पढ़–पढ़ाई से बस में हो सकते तो संसार में बहुत ही पढ़े–लिखे लोग हैं। तुलसी साहब कहते हैं:

काम क्रोध लोभ मोह अहंकार की जब लग घट में खान
क्या पंडित क्या मूर्खा दोनों एक समान

प्यारेयो! हमें अपने अंदर झाँककर देखना चाहिए कि मैं बाहर दुनिया को महात्मा बनकर दिखाता हूँ क्या मैं सचमुच महात्मा हूँ, कहीं मैं लिफाफा तो नहीं? हर जन्म के बाद हमारी परख होनी है। गुरु साहब कहते हैं:

उधड़ गया वो खोटा ढबुआ जद नदर सराफा आया।

आप शब्द–रूप गुरु को धोखा नहीं दे सकते वह आपके अंदर बैठा है, वह बेलिहाज ताकत है। आप इन्हें न पढ़–पढ़ाई से जीत सकते हैं और न बाहर के किसी साधन से जीत सकते हैं। किसी महात्मा ने इन पाँचों को डाकू तो किसी ने इन्हें चोर कहा है। सहजो बाई इन्हें चोर कहकर बयान करती हैं इनकी गाँठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी ब्रह्म तक है इसलिए जो ऋषि–मुनि ब्रह्म तक पहुँचे वे मन के जाल में फँस गए।

आप इतिहास पढ़कर देख लें! जैमिनी मुनि ने कर्मों की फिलोस्फी पर एक किताब लिखी। अठारह पुराणों में से यह एक पुराण कर्मों की फिलोस्फी का है। जैमिनी मुनि उस किताब को दिखाने के लिए अपने गुरु वेद व्यास जी के पास गए, गुरुदेव कमाई वाले थे। गुरुदेव ने कहा, ''किताब अच्छी है मैं तारीफ करता हूँ लेकिन तू इससे अंदर बैठे चोरों को नहीं जीत सकता।'' जैमिनी मुनि ने कहा, ''आप देखें मैंने इसमें सब कुछ लिख दिया है।'' जीव यह नहीं जानता कि मेरे गुरुदेव जो कह रहे हैं यह उनका जातिय तजुर्बा है।

जैमिनी मुनि का यह ख्याल था कि मैं तो जंगलों में रहता हूँ मुझे न कपड़ो की जरूरत है और न ही किसी और चीज की जरूरत है। शिष्य जब गिरता है तो उसे बचाना गुरु का परम धर्म होता है। रात का समय था बारिश हो रही थी तूफान चल रहा था। वेद व्यास जी एक लड़की का रूप धारण करके जैमिनी मुनि के पास चले गए। उस लड़की ने जैमिनी

मुनि से कहा, ''मैं एक राजा की लड़की हूँ, मैं अपने साथ वालों से बिछुड़ गई हूँ। यहाँ जंगल में मुझे शेर खा जाएगा, आप मुझे शरण दें।''

जैमिनी मुनि ने कई बहाने लगाए कि मैं कभी भी औरत को अपने नजदीक नहीं रखता। उस लड़की ने जैमिनी मुनि की बहुत तारीफ की कि साधु तो दयावान होते हैं परोपकारी होते हैं आप मुझे अपनी बेटी समझकर रात को अपने पास रख लें। जैमिनी मुनि के दिल में ख्याल आया कोई बात नहीं मैं बाहर सो जाऊँगा और उस लड़की से कह दिया कि चाहे मैं भी कहूँ तूने दरवाजा नहीं खोलना। आमतौर पर जब हमने औरतों की शक्ल नहीं देखी होती तो हम सोचते हैं कि हम इस तरफ से बच गए क्योंकि इसी वजह से हम घर से भागे होते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

कहो कबीर हम ताँका दास माया में जो रहे उदास।

हम सोचते हैं अगर हम घर में रहेंगे तो पता नहीं माया ने कौन सा रूप धारण करके हमें लुभा लेना है, ठग लेना है। भ्रम का नाम माया है। वैसे हम करंसी को भी माया कहते हैं, यह भी भरमाती है, लोभ देती है और मीठे पदार्थों में फँसा देती है। जब जैमिनी मुनि अपने तप वाले आसन पर बैठा तो आँखों के आगे उस लड़की की शक्ल आने लगी फिर ख्याल किया लेकिन लड़की की शक्ल एक तरफ नहीं हुई।

आखिर जैमिनी मुनि ने सोचा रात बड़ी है चलो बातचीत कर लेते हैं वह भी उदास न हो। मन अंदर ही वकील की तरह समझाता है कि बातचीत करने से कोई फर्क नहीं पड़ता। जैमिनी मुनि ने जाकर लड़की को आवाज दी तो उस लड़की ने कहा, ''आपका ही हुक्म है अगर मैं भी दरवाजा खोलने के लिए कहूँ तब भी दरवाजा नहीं खोलना।'' जैमिनी मुनि ने कहा, ''कुटिया मेरी है तू इसकी मालिक बन गई है।'' लड़की ने कहा, ''आप जो मर्जी कह ले मैं दरवाजा नहीं खोलूंगी सुबह आपकी कुटिया छोड़ दूँगी, आपकी आज्ञा का पालन करना बहुत जरूरी है।''

जैमिनी मुनि कुटिया की छत फाड़कर नीचे कूद गया तो आगे देखता है कि उसके गुरुदेव वेद व्यास जी चौंकड़ी(पलाथी)लगाकर बैठे हैं। जैमिनी मुनि शर्मिन्दा हो गया। वेद व्यास जी ने कहा, ''मैंने तुझसे क्या कहा था? जब हम ज्यादा बड़ाई मारते हैं तब गिरते हैं।''

जब भाई जोगा को अहंकार हुआ तब गुरु गोबिंद सिंह जी ने पहरेदार बनकर उसे बचाया। अगर हम अपनी तरफ से कुछ करें तो गुरु अपनी ड्यूटी जरूर निभाता है। कबीर साहब कहते हैं:

पढ़ना लिखना चातरी यह तो काम है सहज।

पढ़ना–लिखना बहुत आसान है लेकिन गगन के ऊपर चढ़ना बहुत मुश्किल है। गुरु नानकदेव जी ने तो यहाँ तक कहा है:

लोभी का वसाह न कीजे जेका पार वसाए
अन्त काल तिथे टोहे जित्थे हथ न पाए

कबीर साहब कहते हैं:

कामी क्रोधी लालची इनसे भक्ति न होय
भक्ति करे कोई सूरमा जाति वर्ण कुल खोय

सहजो बाई ने प्यार से कहा है:

धनवन्ते अति ही दुःखी निर्धन दुःख का रूप
साध सुखी सहजो कहे जिन पाया भेद अनूप

यहाँ न धनी सुखी है न गरीब सुखी है। वही सुखी है जिसे नाम मिल गया, वह कमाई करने लगा और अंदर जाने लगा। सहजो बाई कहती है:

न सुख विद्या के पढ़े न सुख वाद विवाद
साध सुखी सहजो कहे लग्गी सुन्न समाध

आप ऐसा न सोचें कि हम विद्या पढ़कर इन डाकुओ पर विजय प्राप्त कर लेंगे, शान्ति हासिल कर लेंगे। किसी के साथ झगड़ा करने में भी सुख नहीं कि मैं सबसे ज्यादा पढ़ा–लिखा हूँ। गुरु नानक साहब कहते हैं:

जेता पढ़या तेता कड़या बहो तीर्थ भवया तेतो लवया
बहो भेख किया देही दुख दीया सो वी जीया अपना कीया
अन्न न खाया स्वाद गँवाया बहो दुःख पाया दूजा भाया
वस्त्र न पहरे अह निस कहरे, मौन विगूता क्यों जागे गुरु बिन सुत्ता

जब तक हमें महात्मा नहीं मिलते तब तक हम दुनिया की तरफ से जागते हैं और परमात्मा की तरफ से सोए हुए हैं। जब महात्मा हमें नाम के साथ जोड़ देते हैं तो हम धीरे–धीरे दुनिया की तरफ से सोना शुरु कर देते हैं, परमात्मा की तरफ से जागना शुरु कर देते हैं। हम रोज सुबह उठकर अभ्यास में बैठते हैं ये हम अपने मन की जंगाल(जंग)हटाने में लगे हुए हैं।

मन लागत लागत लागत है

सहजो बाई ने हमें अच्छी तरह समझाया कि मन लगता–लगता लग जाता है। **अपने मन को समझाएं**, इसे भजन में जरूर बिठाएं। मैं कई दिनों से आपको समझा रहा हूँ आशा करता हूँ कि आपने अपने घर–परिवार में जाकर, अपने कर्मों के मुताबिक आपको जो जिम्मेवारियाँ मिली हैं उन्हें भी निभाना है और इनमें रहते हुए अपना भजन–सिमरन भी बनाना है।

सहजो बाई ने बहुत प्यार से कहा है कि हमारी देह भी सगी नहीं। जीते जी बैल की तरह जोता जाता है और मरने के बाद अपने मतलब के लिए मन्नते माँगते हैं कि हमारा ये काम करेगा तो हम तेरी मन्नत देंगे। चार ईंटे खड़ी करके उसे पूजते रहते हैं लेकिन यह पता नहीं कि वह इस देह से छूटकर किसका बैल बना फिरता है और उसने कितने जामें धारण किए हैं। हम अपने मतलब के लिए रो रहे हैं उसके लिए कुछ नहीं कर रहे और न ही हम कुछ करने योग्य हैं। जिन्हें यह नहीं पता कि मौत का फरिश्ता आया कहाँ से और कान से पकड़कर ले कहाँ गया? अन्त समय में वे हमारी क्या मदद करेंगे? वे ज्यादा से ज्यादा रो लेंगे और रोएंगे भी अपने मतलब के लिए। कबीर साहब कहते हैं:

आसी पासी योद्धा खड़े सभी बजावें गाल
मंज महल्लों ले गया ऐसा काल कराल

मैंने अपनी जिंदगी में राजा कपूरथला और राजा पटियाला की मौत देखी है। फौज के काफी आदमी महल के आस–पास खड़े थे, काफी मजबूत पहरा था। हम जितने भी पहरेदार खड़े थे हमें तभी पता लगा जब किसी दूसरे को गद्दी पर बिठा दिया गया। वह बहुत जबरदस्त शक्ति है उस समय हमारी कौन मदद करेगा? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

लक्खां ऊपर फरमाईश तेरी लक्ख उठ करें सलाम
जे पत लेखे न पए सब्बे पूत खँवार

चाहे रोज ही आपको फौजें सलाम करती हों लाखों ही लोग आपके गले में हार डालकर आपका मान–सम्मान करते हों वे खुद तो ख्वार होते हैं और उनको मानने वालों की भी वही हालत होती है। हमने इन मीठे ठगों के बीच रहते हुए इनसे बचना भी है। गुरु तेगबहादुर साहब कहते हैं:

जगत में झूठी देखी प्रीत अपने हित स्यों सब लागे क्या दारा क्या मीत
मेरो मेरो सबहो कहत है हित स्यों बाँधयो चीत
अंत काल संगी नहीं कोई ऐह अचरज है रीत
मन मूर्ख अजे न समझया सिख दा हारयो मीत

सहजो बाई ने एक जगह कहा है अगर दुनिया के पदार्थ किसी के साथ जाते होते तो हमारे बड़े–बुजुर्ग इन पदार्थों को अपने साथ ले जाते, ये हमारे हिस्से में न आते। ये पदार्थ हमारे हिस्से में तभी आए कि उनके साथ नहीं गए तो अब हम कौन सी उम्मीद लगाकर बैठे हैं कि हम इन पदार्थों को अपने साथ ले जाएंगे? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन नामे को संग न साथी मुक्ते नाम ध्यामणया।

हमारे साथ जाने वाली चीज 'नाम' है, जो हमारे गुरुओं ने हमें बिना किसी मुआवजे के दी है। हमारी हामी भरी है कि मैं इसकी संभाल करूंगा। यहाँ तक कि सन्त जिन कपड़ों में नाम देते हैं वे वैसे कपड़ों में आकर ही

सेवक की संभाल करते हैं। एक प्रेमी ने बाबा जयमल सिंह जी से पूछा, ''क्या यह सच है कि आप अंत समय में आते हैं?' बाबा जी ने हँसकर कहा, ''तू मेरे कपड़े देख ले उस समय भी मैंने यही कपड़े पहने होंगे।''

प्यारेयो! यह बातों का मजबून नहीं। हो सकता है सेवक बीस या चालीस साल जीवित रहे। हो सकता है गुरु इस संसार में इतनी देर रह जाए, क्या आप उसी कुर्ते–पायजामा में इतना वक्त काट लेंगे? गुरु ने जिस हालत में नाम दिया होता है वह सेवक के दिल में उसी तरह बैठ जाता है, यह सन्तों की जिम्मेवारी है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''नाम तवज्जो होती है अगर नाम अक्षर हो तो पाँच साल की लड़की भी नाम बता सकती है।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर गुरु की संभाल देखनी है तो सेवक का अन्त समय देखें। जो नाम की कमाई नहीं करते, गुरु की आज्ञा का पालन नहीं करते वे अंत समय में कहें कि गुरु नहीं आया, गुरु ने कोई कर्जा तो उठाया नहीं कि वह आए और हम कुछ न करें।'' कबीर साहब कहते हैं:

गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खां में चूक
अंधे एक न लग्गी ज्यों बाँस बजाई फूक

कई ऐसे मौके देखे हैं कि गुरु आकर संभाल कर लेता है। सैय्यदपुर के लाभ सिंह ने नाम लिया, वह बुरी संगत में फँस गया। उसके भाई बहादुर सिंह ने उसे काफी समझाया कि यह ठीक नहीं लेकिन मन जबरदस्त है। जब अन्त समय आया लाभ सिंह के पेट में अल्सर हो गया। बहादुर सिंह बहुत भरोसे वाला था उसने लाभ सिंह से कहा कि तू स्वरूप का ध्यान कर, अगर सिमरन याद नहीं तो मैं सिमरन बोलता हूँ। लाभ सिंह ने रोते हुए कहा, ''सिमरन भी याद है और स्वरूप तो आया हुआ है लेकिन मुझे बहुत शर्म आ रही है मेरी आत्मा गुरु के आगे नहीं हो रही, गुरु फिर भी मुझ पापी को नहीं भूला लेकिन मैंने क्या किया?''

आपने जो कुछ भी सतसंग में सुना है अपने घरों में जाकर इसके ऊपर अमल करना है, परिवार की जिम्मेवारियों को भी निभाना है। सच्चे पातशाह महाराज कृपाल का वाक याद रखें, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं हजार काम छोड़कर अभ्यास में बैठें और उस समय तक तन को खुराक न दें जब तक आत्मा को खुराक नहीं दे लेते।'' आज के युग का धर्म अन्न में है, प्राणों को अन्न ही ताकत देता है। आत्मा की खुराक शब्द–नाम की कमाई है अगर खाना न खाएं तो तन कमजोर हो जाता है। पता नहीं हमारी आत्मा कितने जन्मों से कमजोर है। सतसंग के लिए भी मौका निकालें, अपना अभ्यास करें। सतसंगी को सिमरन की कमी चलते–फिरते ही पूरी कर लेनी चाहिए। बस में, ट्रेन में, हवाई जहाज में सफर करते समय या किसी के साथ बातचीत करते हुए भी आपका सिमरन चलते रहना चाहिए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मुख की बात सगल स्यों करदा जीव संग प्रभ अपने धर दा।

आपका दिल आपका ख्याल सिमरन की तरफ हो। मैं आप सबकी वापिसी यात्रा की शुभकामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि आपने जो कुछ भी सुना है आप इस पर अमल करेंगे। ***

सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

28 सितम्बर 1988

ध्यान

16 पी.एस. आश्रम रायसिँह नगर, राजस्थान

एक प्रेमी: *महाराज जी, मुझे सन्तमत में आए हुए अभी थोड़ा ही समय हुआ है। मुझे* ***ध्यान*** *के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है, आप मुझे इस बारे में समझाएं?*

बाबा जी: ध्यान के बारे में बहुत कुछ बताया जा चुका है, आप पुरानी मैगजीनें पढ़ें, मैगजीनों में से आपको बहुत जानकारी मिलेगी। दिल को दिल से राह होती है आप जिसे याद करते हैं उसका **ध्यान** अपने आप ही आपके अंदर आना शुरु हो जाता है। आप चलते–फिरते प्यार से सिमरन करते हैं, याद बनाते हैं तो ध्यान अपने आप ही आने लग जाता है। जब आप एकाग्र होते हैं तो आपका ध्यान बनने लग जाता है।

सतसंगियों के साथ बहुत सी घटनाएं घटती रहती हैं। कई बार गुरु प्रत्यक्ष रूप में मदद करता है, अभ्यास में दर्शन देता है और सोते हुए भी दर्शन देता है। हमें गुरु स्वरूप को आँखों से दूर नहीं करना चाहिए, कई बार हम ऐसे स्वरूप से फायदा भी उठा लेते हैं।

गुरु शिष्य का रिश्ता अटूट होता है। सतसंगी कई बार चमत्कार भी देखते हैं कि जब रात को सोते हुए हमारा मन शान्त होता है गुरु हमारी आत्मा को ऊपर के मंडलों में खींच लेता है। ऐसा होने के बाद कई दिन तक प्रेमी का मन खुश रहता है लेकिन हम उस वक्त का फायदा नहीं उठाते उसे स्वपन ही समझ लेते हैं।

इस ग्रुप में ऐसे भी प्रेमी बैठे हैं जिन्होंने इंटरव्यू में अपने–अपने अनुभव बताए कि किसी को महाराज सावन के, किसी को महाराज कृपाल के और किसी को दोनों ही गुरुओं के दर्शन हुए। यह अपने–अपने

बर्तन पर निर्भर करता है जिसका जैसा बर्तन है उसमें वैसी ही वस्तु ठहर जाती है। प्यारेयो, जिसकी जैसी भावना होती है वह अपने अंदर उसी तरह हरि की मूर्त देखता है।

यहाँ जितने प्रेमी बैठे हैं सबके एक जैसे विचार नहीं, सबका एक जैसा तजुर्बा भी नहीं। गुरु और शिष्य के बीच छोटी–मोटी घटनाएं तो घटती ही रहती हैं। अगर घर में कोई घटना घटते समय या किसी एक्सीडेंट के समय हमारा ख्याल गुरु की तरफ है तो गुरु दर्शन देता है। कभी घटना घटने से एक–दो दिन पहले गुरु चेतावनी भी देता है।

सन्त हमें कभी भी अपनी कीमती कमाई को बर्बाद करने की सलाह नहीं देते। सन्त सदा मालिक के भाणें में खुश रहते हैं। सन्त भूत काल, वर्तमान काल और भविष्य काल के बारे में जानते हैं कि हमारे प्रालब्ध कर्मों के अनुसार ही घटना घटती है और उसे भोगने में ही हमारा फायदा है। हम सतसंगी लोग भी ऐसी दलीलें देने लगते हैं कि यह घटना क्यों घटी? अगर ऐसा करते तो यह घटना न घटती। आमतौर पर जब डॉक्टर को मरीज की मौत का पता नहीं लगता तो वह दलील बाजी से काम लेता है कि इसे दिल का दौरा पड़ गया, इसका खून रुक गया लेकिन यह नहीं कहता कि इसका समय निश्चित था।

हमें लगातार सिमरन करना चाहिए, चलते–फिरते भी अपनी एकाग्रता की तरफ ख्याल रखना चाहिए। मन को फिजूल बातें सोचने नहीं देनी चाहिए। जब हम सिमरन करके आँखों के पीछे आते हैं स्थूल, सूक्ष्म और कारण के पर्दे उतारकर अंदर जाते हैं तब **ध्यान** अपने आप ही बन जाता है। आत्मा की दो शक्तियाँ देखने वाली निरत और सुनने वाली सुरत ये दोनों हमारे अंदर हैं। जब हम अपनी आत्मा से तीनों पर्दे उतार लेते हैं तब हमारा ध्यान अपने आप ही दसवें द्वार में लग जाता है। पल्टू साहब कहते हैंः

भजन तेल की धार साधना अधके साधी

जिस तरह तेल की धार नहीं टूटती उसी तरह यहाँ पहुँचे हुए सतसंगी की वृति नहीं फैलती और अटूट ध्यान लग जाता है। गुरु नानक जी कहते हैंः

गुरुमुख जपिए लाए ध्याना

सतसंगी सिमरन की महानता को नहीं समझते अगर इन्हें सिमरन की महानता का ज्ञान हो जाए तो **ध्यान** लगाने में ज्यादा तकलीफ नहीं होती। आपका मन सारा दिन फिजूल की बातें सोचता रहता है अगर आप यही सोच गुरु की तरफ लगा दें, सिमरन की तरफ लगा दें तो आपका सिमरन बन जाएगा।

मैं आपको दुनियावी मिसाल देकर समझाता हूँ जैसे माँ–बेटे का प्यार है याद करने से ही उसका ध्यान आँखों के सामने आ जाता है। पति–पत्नी का प्यार है एक–दूसरे को याद करने से ही **ध्यान** आँखों के सामने आ जाता है। इसी तरह हम दुनिया के कारोबार को मामूली सा याद करते हैं तो उसका नक्शा हमारी आँखों के सामने आ जाता है।

सन्त कहते हैं कि ये सब चीजें हमारे जीवन काल तक ही हमारे साथ रहती हैं, क्यों न हम गुरु की याद को अपने दिल में बिठाएं। सतगुरु ने इस दुनिया के बाद भी हमारे साथ रहना है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''वही सज्जन है जो मुश्किल के समय में काम आए।''

तजुर्बा बताता है कि जिन लोगों को दिन में ज्यादा सोचने और बोलने की आदत होती है वे लोग रात को नींद में उन्हीं बातों को बड़बड़ाते हैं। ऐसों के परिवार के लोग सोचते हैं शायद इस पर भूत–प्रेत का साया है। यह भूत–प्रेत का साया नहीं, दिन भर के सोच विचार होते हैं अगर हम ऐसी ही लगन से गुरु के बारे में सोचें तो हम रात में गुरु का सिमरन कर रहे होंगे, गुरु से बातें कर रहे होंगे। कबीर साहब कहते हैंः

सुपने हूं बरड़ायके जे मुख निकसे नाम
ताँके पग की पनही मेरे तन को चाम

अगर कोई स्वपन में बड़बड़ाकर भी उस प्रभु का नाम लेता है, मैं उस पर बलिहार जाता हूँ। मैं उसे अपने तन के चमड़े की जूती बनाकर पहनाने के लिए भी तैयार हूँ।

आप जिसे याद करते हैं आपका मन उसकी तरफ एकाग्र होगा और उसकी शक्ल आपकी आँखों के सामने आएगी। सिमरन करने से एकाग्रता प्राप्त होगी, **ध्यान** बन जाएगा। ***

कृपाल गुरु आजा संगत पुकार दी

कृपाल गुरु आजा x 2, संगत पुकार दी,
तेरे हथ विच चाबी ओ दाता, सारे संसार दी x 2

संगत पुकार दी है, दोवें हथ जोड़ के,
कित्थे चले गयों दाता, संगत नूं छोड़ के x 2
देंदा रह दिखाली सदा, मेरी ऐह पुकार जी, तेरे हथ विच....

संगत दे वालिया, देर न लगावीं वे,
सुणके आवाज साडी, छेती-छेती आवीं वे x 2
दर्शनां नूं बैठी, संगत तैयार जी, तेरे हथ विच....

संगत दा वैद्य, तेरे हथ च दवाई वे,
ताला किसे होर लाया, तैं चाबी लाई वे x 2
जोगे नूं बचाया बण, आप पहरेदार जी, तेरे हथ विच....

नानकी पुकारेया, तूं झट विच आया सी,
पुकार वाला फुल्का, प्यार नाल खाया सी x 2
ओसे तरहा आजा तूं, मैनूं ना विसार जी, तेरे हथ विच....

सुणदा पुकार दाता, मुढ तों तूं आया वे,
मक्खण लुभाणे दा, जहाज बन्ने लाया वे x 2
संगत नूं बचा ले, ऐह पुकार 'अजायब' साध दी, तेरे हथ विच....

RNI No. RAJHIN / 2003 / 9899

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज